Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Article

द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मन महिलाओं के खिलाफ हिंसा

प्रीतम लाम्बा *

सहायक आचार्य, (वीएसवाई), इतिहास एवं पुरातत्व विभाग

पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय

सीकर, राजस्थान , भारत

Corresponding Author: *प्रीतम लाम्बा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18524941

सारांश

युद्ध के समय में, महिलाओं को अक्सर हिंसात्मक क्रुरता, बर्बरता और वेदना का सामना करना पड़ता है। युद्धकालिक तनाव मौजूदा लैंगिक असमानताओं को बढ़ाता है, जिससे महिलाओं को यौन हिंसा, तस्करी और जबरन विस्थापन सहित विभिन्न प्रकार के अमानवीय दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। युद्ध के दौरान सामाजिक संरचनाओं का टूटना एक ऐसे माहौल में योगदान देता है जहां महिलाएं असंगत रूप से प्रभावित होती हैं।

युद्ध के समय में, महिलाओं को अक्सर हिंसात्मक क्रुरता, बर्बरता और वेदना का सामना करना पड़ता है। युद्धकालिक तनाव मौजूदा लैंगिक असमानताओं को बढ़ाता है, जिससे महिलाओं को यौन हिंसा, तस्करी और जबरन विस्थापन सहित विभिन्न प्रकार के अमानवीय दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। युद्ध के दौरान सामाजिक संरचनाओं का टूटना एक ऐसे माहौल में योगदान देता है जहां महिलाएं असंगत रूप से प्रभावित होती हैं।

यौन हिंसा कार्यों की एक व्यापक श्रेणी है जिसमें एक व्यक्ति अवांछित या हानिकारक यौन कार्यों के माध्यम से दूसरे व्यक्ति पर अपनी शक्ति और नियंत्रण का प्रयोग करता है।[1] यौन हिंसा का तात्पर्य बलपूर्वक, जबरदस्ती या अवांछित यौन प्रयासों के माध्यम से यौन कार्य प्राप्त करने के किसी भी कार्य या प्रयास से है। इसमें बलात्कार, यौन उत्पीड़न, उत्पीड़न और शोषण सहित कई प्रकार के अपराध शामिल हैं। यौन हिंसा विभिन्न संदर्भों में हो सकती है, जैसे अंतरंग साथी संबंधों, समुदायों या सशस्त्र संघर्षों के दौरान। यह किसी व्यक्ति की शारीरिक स्वायत्तता का गंभीर उल्लंघन है और अक्सर इसके गंभीर शारीरिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक परिणाम होते हैं। बलात्कार शब्द मध्य अंग्रेजी रेपेन, रैपेन से आया है - अपहरण करना, लूटना, छीनना। इसकी उत्पत्ति लैटिन रैपेरे से हुई है जिसका अर्थ है चोरी करना, जब्त करना या ले जाना, जैसे कि महिलाएं संपत्ति थीं, जो कि पुरुषों ने कई शताब्दियों तक सोचा था।[2]

मुख्य शब्द: द्वितीय विश्व युद्ध, यौन हिंसा, जर्मन महिलाएँ, मित्र राष्ट्रों की सेनाएँ, लैंगिक आधारित हिंसा

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-01-2026
- **Accepted:** 28-01-2026
- **Published:** 08-02-2026
- **MRR:**4(2); 2026: 66-75
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

प्रीतम लाम्बा. द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मन महिलाओं के खिलाफ हिंसा. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(2):66-75.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

[1] https://centerforsurvivors.msu.edu/education-resources/sexual-violence-educational-information/sexual-violence-definitions.html#:~:text=Sexual%20violence%20is%20a%20broad,unwanted%20or%20harmful%20sexual%20actions.

[2] Lamb, Christina. Our Bodies, Their Battlefield: What War Does to Women. William Collins, 2020.

© 2026 प्रीतम लाम्बा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

इस शोध आलेख में जिस मुद्दे को संबोधित किया जा रहा है वह यह है कि युद्ध के दौरान और उसके बाद यौन हिंसा के विभिन्न रूप कैसे घटित हुए हैं। यह शोध विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के यूरोपीय रंगमंच और मित्र देशों के सैनिकों द्वारा जर्मन महिलाओं के साथ की गई यौन हिंसा के कृत्यों पर केंद्रित होगा। इसके अलावा, उस अवधि में महिलाओं के खिलाफ विभिन्न प्रकार की यौन हिंसा उत्पन्न करने वाली स्थितियों की जटिलता का पता लगाने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन महिलाओं के खिलाफ हिंसा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक महत्व रखती है, जो युद्धकालीन अत्याचारों के अक्सर नजरअंदाज किए गए पहलुओं पर प्रकाश डालती है। इस अध्याय की जांच से नागरिक आबादी विशेषकर महिलाओं पर संघर्ष के व्यापक प्रभाव की अंतर्दृष्टि मिलती है, जो लड़ाकों पर केंद्रित प्रचलित कथाओं को चुनौती देती है। जर्मन महिलाओं के अनुभवों को समझने से युद्धकालीन पीड़ा की चर्चा में सूक्ष्मता आती है और वैश्विक संघर्षों की मानवीय लागत की अधिक व्यापक समझ में योगदान मिलता है। इसके अतिरिक्त, इस विषय की खोज सहानुभूति को बढ़ावा देती है और उनकी पुनरावृत्ति को रोकने के लिए ऐतिहासिक अन्यायों को स्वीकार करने और उनसे सीखने के महत्व को रेखांकित करती है।

सीमाएं

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन महिलाओं के खिलाफ हिंसा की खोज की सीमाएँ ऐतिहासिक शोध की अंतर्निहित चुनौतियों में निहित हैं। समय बीतने के साथ-साथ दुर्लभ और खंडित प्राथमिक स्रोत, हिंसा की सीमा और विवरण की व्यापक समझ में बाधा बन सकते हैं। उपलब्ध रिकॉर्ड में व्याख्यात्मक पूर्वाग्रह और संवेदनशील घटनाओं की संभावित कम रिपोर्टिंग जटिलता में और योगदान देती है। इसके अतिरिक्त, जर्मन महिलाओं पर ध्यान युद्ध के दौरान समान हिंसा से प्रभावित अन्य राष्ट्रीयताओं की महिलाओं के विविध अनुभवों को पूरी तरह से शामिल नहीं कर सकता है। दर्दनाक घटनाओं की गहराई में जाने की नैतिक चुनौतियाँ, जिनमें अक्सर व्यक्तिगत कहानियाँ शामिल होती हैं, विश्लेषण की गहराई में भी सीमाएँ पैदा करती हैं।

शोध की पद्धतियों

सेमिनार पेपर में नियोजित अनुसंधान पद्धति में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन महिलाओं के खिलाफ हिंसा में व्यापक अंतर्दृष्टि इकट्ठा करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण शामिल है। ऐतिहासिक घटनाओं के लिए व्यक्तिगत साक्ष्यों, डायरियों आदि प्राथमिक स्रोतों की जांच करने का प्रयास किया गया है। मुख्यत: द्वितीयक स्रोत, जिसमें विद्वानों के लेख, किताबें, वेबसाईट डाटा और अकादमिक विश्लेषण शामिल हैं, का प्रयोग किया गया है। जर्मन महिलाओं द्वारा अनुभव की गई हिंसा की सूक्ष्म प्रकृति का पता लगाने के लिए एक गुणात्मक विश्लेषण नियोजित किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन महिलाओं के खिलाफ हिंसा पर शोध एक जटिल और संवेदनशील विषय है। विद्वानों ने विभिन्न सन्दर्भों में महिलाओं के अनुभवों पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न पहलुओं की खोज की है। एंटनी बीवर के "बर्लिन: द डाउनफॉल 1945" जैसे कुछ अध्ययन, बर्लिन पर सोवियत कब्जे के दौरान जर्मन महिलाओं पर हुई व्यापक यौन हिंसा पर जोर देते हैं[3]। "बर्लिन में एक महिला" एक गुमनाम जर्मन महिला द्वारा लिखी गई एक डायरी है जो बर्लिन में द्वितीय विश्व युद्ध के अंतिम सप्ताहों के दौरान उसके अनुभवों को याद करती है। यह पुस्तक पहली बार 1954 में गुमनाम रूप से प्रकाशित हुई थी और बाद में पता चला कि यह पत्रकार मार्टा हिलर्स का काम है। यह डायरी 1945 में बर्लिन पर सोवियत कब्जे के दौरान लेखक के जीवन का एक स्पष्ट और दर्दनाक विवरण ` प्रदान करती है, जिसमें युद्ध के बाद महिलाओं द्वारा अनुभव की गई व्यापक यौन हिंसा भी शामिल है। "क्राइम्स अनस्पोकन: द रेप ऑफ जर्मन वीमेन एट द एंड ऑफ द सेकेंड वर्ल्ड वॉर" में मिरियम गेभार्ड्ट मित्र देशों की सेनाओं द्वारा जर्मन महिलाओं के खिलाफ की गई यौन हिंसा की सीमा का विस्तृत और सावधानीपूर्वक शोध किया गया विवरण प्रस्तुत करती हैं। "आवर बॉडीज, देयर बैटलफील्ड्स" क्रिस्टीना लैम्ब की पुस्तक है जो महिलाओं पर संघर्ष के प्रभाव की पड़ताल करती है। लैम्ब युद्ध क्षेत्रों में महिलाओं के कष्टदायक अनुभवों को उजागर करती है और उनके द्वारा सही जाने वाली क्रूरताओं पर प्रकाश डालती है।

महिलाओं के खिलाफ हिंसा का स्वरूप

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, जर्मन महिलाओं को घरेलू मोर्चे पर और संघर्ष के बाद महत्वपूर्ण चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जैसे ही युद्ध शुरू हुआ, जर्मनी में महिलाओं की स्थितियों में भारी बदलाव आया, जो हिंसा, विस्थापन और व्यवसाय की जटिल गतिशीलता के कारण हुआ।

युद्ध के शुरुआती चरणों में, जर्मन महिलाओं ने युद्ध प्रयासों का समर्थन करने के लिए विभिन्न भूमिकाएँ निभाईं। पुरुष आबादी के एक बड़े हिस्से के सेना में भर्ती होने के साथ, महिलाओं ने घरेलू मोर्चे पर, कारखानों, कार्यालयों और खेतों में काम किया। जर्मन शहरों को निशाना बनाने वाले मित्र देशों के रणनीतिक बमबारी अभियान ने दैनिक जीवन को और अधिक बाधित कर दिया, और महिलाओं ने नागरिक सुरक्षा और पुनर्निर्माण प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जैसे-जैसे युद्ध जर्मनी के विरुद्ध हो गया और मित्र देशों की सेनाएँ आगे बढ़ीं, जर्मन महिलाओं को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।[4] मित्र देशों की सेना के आगमन से भावनाओं और अनुभवों का एक जटिल मिश्रण आया। जबकि कुछ महिलाओं ने नाज़ी शासन के अंत का

[3] Lamb, Christina. Our Bodies, Their Battlefield: What War Does to Women. William Collins, 2020.

[4] Secret Intelligence Service(C-I)On the Treatment and Maltreatment of Women Room 15. Discussion Notes[https://www.secretintelligenceservice.org/wp-content/uploads/2016/04/BRUTAL-MASS-RAPE-OF-GERMAN-WOMEN-During.pdf]

© 2026 प्रीतम लाम्बा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

स्वागत किया, दूसरों को कब्ज़ा करने वाली ताकतों के हाथों हिंसा, दुर्व्यवहार और यौन उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। बलात्कार और दुर्व्यवहार की घटनाएं दर्ज की गईं, जो मुक्ति के अंधेरे पक्ष पर प्रकाश डालती हैं।

युद्ध के बाद युद्ध अपराधियों पर मुकदमा चलाने के लिए आयोजित नूर्नबर्ग ट्रायल ने यौन हिंसा के कुछ उदाहरणों को संबोधित किया। हालाँकि, व्यापक मुद्दे को बड़े पैमाने पर आगे नहीं बढ़ाया गया, और जर्मन महिलाओं के अनुभव युद्ध के बाद हाशिए पर रह गए। उस समय के सामाजिक मानदंडों ने अक्सर इन दर्दनाक घटनाओं के आसपास चुप्पी की संस्कृति में योगदान दिया।

जर्मन महिलाओं के लिए चुनौतियाँ शत्रुता की समाप्ति के साथ समाप्त नहीं हुईं। युद्ध के बाद की अवधि अपनी तरह की कठिनाइयाँ लेकर आई, जिनमें व्यापक विस्थापन, परिवार के सदस्यों की हानि और एक तबाह देश के खंडहरों के बीच अस्तित्व के लिए संघर्ष शामिल था। जर्मन समाज के अस्वीकरण और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया ने उन महिलाओं के जीवन को और अधिक जटिल बना दिया, जो युद्ध से गुजर चुकी थीं।

इस ऐतिहासिक आख्यान को संवेदनशीलता और बारीकियों के साथ समझना आवश्यक है। जर्मन महिलाओं की पीड़ा को स्वीकार करने से नाजी शासन द्वारा किए गए अत्याचार कम नहीं हो जाते। इसके बजाय, यह संघर्ष और कब्जे के समय मानव अनुभव की जटिलता पर प्रकाश डालता है।

हाल के वर्षों में, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी सहित संघर्ष क्षेत्रों में महिलाओं के अनुभवों को संबोधित करने की आवश्यकता की पहचान बढ़ रही है। कुछ लोगों का अनुमान है कि अमेरिकियों द्वारा बलात्कार की संख्या 11,000 है (जे. रॉबर्ट लिली); दूसरों का कहना है कि सोवियत द्वारा 2 मिलियन (हेल्के सैंडर), या उड़ान और निष्कासन के दौरान 2 से 2.5 मिलियन (इंगेबोर्ग जैकब्स) थे। जब घटनाएँ घट रही थीं, तब भी प्रचलन में अलग-अलग आंकड़े थे। पीड़ितों का इलाज करने वाले डॉक्टरों ने भी बड़ी संख्या में पीड़ितों का हवाला दिया, खासकर बर्लिन में, जहां घटनाएं विशेष रूप से भयावह थीं और जहां लाल सेना से प्रेरित दहशत के कारण अफवाहें जंगल की आग की तरह फैल गईं।पूर्वी प्रशिया में महिलाओं के प्रति अधिकांश सैनिकों के व्यवहार में वर्चस्व और अपमान व्याप्त था।

द्वितीय विश्व युद्ध के अंतिम चरण के दौरान जैसे ही मित्र सेनाएं बर्लिन की ओर बढ़ीं, शहर की जनसांख्यिकी और महिलाओं की स्थिति में गहरा बदलाव आया। 1945 में बर्लिन पर आक्रमण ने संघर्ष में एक महत्वपूर्ण क्षण को चिह्नित किया, और शहर में महिलाओं के अनुभवों ने युद्ध की व्यापक उथल-पुथल को प्रतिबिंबित किया।[5]

बर्लिन का जनसांख्यिकीय परिदृश्य महत्वपूर्ण रूप से बदल गया क्योंकि शहर नाज़ी जर्मनी को हराने के लिए मित्र राष्ट्रों के प्रयास का केंद्र बिंदु बन गया। कई सक्षम पुरुषों को पहले ही सेना में भर्ती कर लिया गया था, जिससे महिलाओं को घरेलू मोर्चे पर अधिक ज़िम्मेदारियाँ उठानी पड़ीं। जर्मनी और पूर्वी यूरोप के अन्य हिस्सों से शरणार्थियों की आमद ने बर्लिन की जनसांख्यिकीय संरचना की जटिलता को बढ़ा दिया। महिलाओं ने खुद को अभाव, भय और आक्रमण के आसन्न खतरे से भरे शहर में यात्रा करते हुए पाया।

मित्र देशों के आक्रमण के दौरान बर्लिन में महिलाओं की स्थितियाँ बहुत ख़राब थीं। शहर पर तीव्र हवाई बमबारी की गई, जिससे आसपास के इलाके मलबे में तब्दील हो गए और बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ। अराजकता के बीच महिलाओं को अपने परिवारों के लिए आश्रय, भोजन और बुनियादी ज़रूरतें सुरक्षित करने के कठिन काम का सामना करना पड़ा। संसाधनों की कमी ने एक निराशाजनक स्थिति पैदा कर दी। जैसे ही मित्र राष्ट्रों ने बर्लिन पर कब्ज़ा किया, शहर युद्ध का मैदान बन गया और महिलाओं ने खुद को गोलीबारी में फँसा हुआ पाया। सड़क-दर-सड़क तीव्र लड़ाई और युद्ध की क्रूरता ने अपने परिवारों की रक्षा करने की कोशिश कर रही महिलाओं के लिए चुनौतियों को और बढ़ा दिया। हिंसा और विनाश के निरंतर खतरे के साथ, घेराबंदी के तहत एक शहर में रहने के मनोवैज्ञानिक प्रभाव ने बर्लिन की महिलाओं पर एक अमिट छाप छोड़ी।[6]

मुख्य हिंसा

मित्र राष्ट्रों का आगमन बर्लिन की महिलाओं के लिए राहत और अनिश्चितता का मिश्रण लेकर आया। जबकि कुछ ने मित्र राष्ट्रों को दमनकारी नाज़ी शासन से मुक्तिदाता के रूप में देखा, दूसरों ने कब्जे की कठोर वास्तविकताओं का अनुभव किया। द्वितीय विश्व युद्ध के अंतिम चरण के दौरान, रिपोर्टों और दस्तावेजी उदाहरणों से संकेत मिलता है कि जर्मन महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा रूसी, फ्रांसीसी और अमेरिकियों सहित विभिन्न मित्र राष्ट्रों के सैनिकों के हाथों हुई थी।

सोवियत सेना (रूसी)

1941 में सोवियत संघ पर नाजी आक्रमण, ऑपरेशन बारब्रोसा के लॉन्च के बाद रूसियों को वर्षों तक अत्याचारों का सामना करना पड़ा था, जिसका उद्देश्य आर्यों के लिए जगह बनाने और अधिक खाद्य स्रोतों को सुरक्षित करने के लिए स्लावों का सफाया करना था। माना जाता है कि युद्ध के दौरान सोवियत संघ के लगभग 27 मिलियन निवासी मारे गए थे, जिनमें 3 मिलियन से अधिक लोग शामिल थे जिन्हें तथाकथित भूख योजना के तहत जर्मन POW शिविरों में जानबूझकर भूखा रखा गया था। जर्मन महिलाओं को अपमानित करना रूसियों द्वारा उन्हें एक निम्न जाति के रूप में मानने के प्रतिशोध का एक साधन था - महिलाओं की कामुकता उन्हें सबसे आसान लक्ष्य बनाती थी। वर्षों तक जर्मन विरोधी प्रचार किए जाने के बाद, लाल सेना के सैनिकों ने शायद अपने पीड़ितों को इंसान के रूप में नहीं देखा।[7] द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पूर्वी मोर्चे पर सबसे तीव्र और क्रूर लड़ाई देखी गई, और

[5] Thomas, Krishna Ignalaga. "Politics of History and Memory: The Russian Rape of Germany in Berlin, 1945."

[6] Hsu-Ming Teo (1996) The continuum of sexual violence in occupied germany, 1945-49, women'sHistory Review,

[7] Lamb, Christina. Our Bodies, Their Battlefield: What War Does to Women. William Collins, 2020.

© 2026 प्रीतम लाम्बा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सोवियत संघ ने नाजी जर्मनी के खिलाफ संघर्ष में एक महत्वपूर्ण बोझ उठाया। जैसे ही सोवियत सेनाएँ जर्मन क्षेत्र में आगे बढ़ीं, विशेषकर बर्लिन की लड़ाई के दौरान, जर्मन महिलाओं के खिलाफ व्यापक यौन हिंसा की कई रिपोर्टें आईं। इसके पीछे कारण बहुआयामी थे। कुछ सोवियत सैनिकों ने जर्मन सेना द्वारा सोवियत धरती पर किए गए अत्याचारों का बदला लेने की मांग की, उनके कार्यों को प्रतिशोध के रूप में देखा। पूर्वी मोर्चे की क्रूर प्रकृति और तीव्र संघर्ष से उत्पन्न अमानवीयकरण ने अनुशासन को तोड़ने में योगदान दिया, जिससे यौन हिंसा की घटनाएं हुईं।

अनुमान है कि द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में, लाल सेना के सैनिकों ने लगभग 2,000,000 जर्मन महिलाओं और लड़कियों के साथ बलात्कार किया था। नॉर्मन नैमार्क "द रशियन्स इन जर्मनी: ए हिस्ट्री ऑफ़ द सोवियत ज़ोन ऑफ़ ऑक्यूपेशन, 1945-1949"[8] में लिखते हैं। यद्यपि आत्मसमर्पण से पहले के महीनों और उसके बाद के वर्षों में लाल सेना के सदस्यों द्वारा बलात्कार की शिकार महिलाओं और लड़कियों की सटीक संख्या कभी ज्ञात नहीं होगी, उनकी संख्या सैकड़ों हजारों में होने की संभावना है, संभवतः 2,000,000 पीड़ितों के अनुमान के बराबर। बारबरा जोहर द्वारा "बेफ़्रेयर अंड बेफ़्राइट" में बनाया गया।[9]इनमें से कई पीड़ितों के साथ बार-बार बलात्कार किया गया। एंटनी बीवर का अनुमान है कि आधे से अधिक पीड़ित सामूहिक बलात्कार के शिकार थे। नैमार्क का कहना है कि न केवल प्रत्येक पीड़ित को अपने बाकी दिनों में इस आघात को अपने साथ रखना पड़ा, बल्कि इसने पूर्वी जर्मन राष्ट्र को एक बड़ा सामूहिक आघात पहुँचाया।

नैमार्क ने निष्कर्ष निकाला कि "सोवियत कब्जे वाले क्षेत्र में महिलाओं और पुरुषों के सामाजिक मनोविज्ञान को कब्जे के पहले दिनों से लेकर 1949 के पतन में जीडीआर की स्थापना तक, जब तक - कोई तर्क नहीं दे सकता - वर्तमान तक, बलात्कार के अपराध द्वारा चिह्नित किया गया था ।" द्वितीय विश्व युद्ध में सोवियत सैनिकों द्वारा बलात्कार के बाद गर्भवती हुईं जर्मन महिलाओं को अवांछित बच्चे को जन्म देने के कारण और अधिक अपमानित करने के लिए गर्भपात से हमेशा इनकार किया जाता था। परिणामस्वरूप, एंटनी बीवर की पुस्तक "बर्लिन: द डाउनफॉल, 1945" के अनुसार, 1945 में बलात्कार के शिकार बर्लिन की लगभग 90% महिलाओं को इन परिणामी बलात्कारों के परिणामस्वरूप यौन रोग हो गए और 1945 से 1946 तक जर्मनी में पैदा हुए सभी बच्चों में से 3.7% को यौन रोग हो गए। सोवियत सैनिकों द्वारा जर्मन महिलाओं के इस विशेष बलात्कार के पीछे का इतिहास 1992 तक एक वर्जित विषय माना जाता था।

द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में लाल सेना के सैनिकों द्वारा की गई व्यापक और क्रूर यौन हिंसा, जैसा कि नॉर्मन नैमार्क और एंटनी बीवर जैसे विभिन्न इतिहासकारों ने दर्ज किया है, जर्मन महिलाओं पर गहरे आघात और पूर्व के सामूहिक मानस पर स्थायी प्रभाव को उजागर करती है। जिसके परिणामस्वरूप अपने व अपने परिवार का सम्मान बचाने महिलाओं में आत्महत्या की दर में तीव्र वृद्धि हुई। कई महिलाएं अपने हैंडबैग में साइनाइड कैप्सूल और रेजर ब्लेड रखती थीं। अप्रैल 1945 में, बर्लिन में आत्महत्या के मामले 3,881 या प्रति 100,000 निवासियों पर 242.7 थे, जो पिछले वर्षों की तुलना में पाँच गुना अधिक था। 1945 8में, पूरे जर्मनी में आधिकारिक तौर पर आत्महत्या के 7,057 मामले दर्ज किये गये थे; वास्तव में यह आंकड़ा संभवतः अधिक था। अप्रैल और मई 1945 के बीच अपर बवेरिया के कट्टर कैथोलिक क्षेत्र में 42 मामले थे, जबकि पिछले वर्षों में केवल 3 से 5 मामले थे।[10]

बलात्कार न केवल जर्मनों के खिलाफ किए गए बल्कि हंगरी, रोमानिया, पोलैंड और यूगोस्लाविया में सोवियत के अपने सहयोगियों के खिलाफ भी किए गए।[11] जब यूगोस्लाव कम्युनिस्ट मिलोवन जिलास ने विरोध किया, तो स्टालिन ने जवाब दिया: "क्या वह इसे नहीं समझ सकते अगर एक सैनिक जिसने खून, आग और मौत के बीच हजारों किलोमीटर की दूरी तय की है, वह एक महिला के साथ मौज-मस्ती करता है या कुछ छोटी-मोटी हरकतें करता है?"

फ्रांसीसी सेनाएँ

मित्र देशों के गठबंधन के हिस्से के रूप में फ्रांसीसी सेनाएँ युद्ध के बाद जर्मनी पर कब्ज़ा करने में शामिल थीं। फ्रांसीसी सैनिकों ने जर्मनी पर आक्रमण में भाग लिया और फ्रांस को जर्मनी में एक कब्ज़ा क्षेत्र सौंपा गया। पेरी बिडिस्कोम्बे ने मूल सर्वेक्षण अनुमान का हवाला देते हुए कहा कि उदाहरण के लिए, फ्रांसीसी ने "कॉन्स्टेंस क्षेत्र में 385 बलात्कार, ब्रुक्सल में 600 और फ्रायडेनस्टेड में 500 बलात्कार किए।"फ्रांसीसी सेना के सैनिकों पर लियोनबर्ग के पास होफिंगन जिले में बड़े पैमाने पर बलात्कार करने का आरोप लगाया गया था। नॉर्मन नैमार्क के अनुसार, बलात्कार के मामले में फ्रांसीसी मोरक्कन सैनिकों ने सोवियत सैनिकों के व्यवहार से मेल खाया, विशेष रूप से बाडेन और वुर्टेमबर्ग के शुरुआती कब्जे में।

अमेरिकी सेनाएँ

अमेरिकी सैनिक युद्ध के बाद जर्मनी में कब्ज़ा करने वाली सेनाओं का हिस्सा थे। अमेरिकी सैनिकों द्वारा रिपोर्ट की गई यौन हिंसा का पैमाना सोवियत सेनाओं की तुलना में कम था, वहाँ दस्तावेजी मामले थे। जैसा कि इतिहासकार वाल्टर ज़िगलर लिखते हैं, अमेरिकियों द्वारा बलात्कार का विषय 'संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ बाद की घनिष्ठ मित्रता और सोवियत द्वारा किए गए अत्याचारों के कारण, कई

[8] Naimark, Norman M. "About 'the Russians' and About Us: The Question of Rape and Soviet-German Relations in the Soviet Zone of Occupation." Stanford University, May 1991.

[9]Thomas, Kevin. "'Liberators Take Liberties: War, Rape and Children'—a documentary on German women raped by Allied soldiers—opens the two-week event." Article. Published on September 27, 1993. Los Angeles Times[https://www.latimes.com/archives/la-xpm-1993-09-27-ca-39505-story.html]

[10]Gebhardt, Miriam. Crimes Unspoken: The Rape of German Women at the End of the Second World War. Polity Press, 2016.

[11] Lamb, Christina. Our Bodies, Their Battlefield: What War Does to Women. Published by William Collins, 2020.pp 174

© 2026 प्रीतम लाम्बा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

गोलीबारी की तरह, हाशिए पर डाल दिया गया था।[12] टेकन बाय फ़ोर्स में, जे. रॉबर्ट लिली का अनुमान है कि जर्मनी में अमेरिकी सैनिकों द्वारा किए गए बलात्कारों की संख्या 11,040 है। हालाँकि, जर्मन इतिहासकार मिरियम गेबहार्ट के व्यापक शोध से पता चलता है कि अमेरिकी सैनिकों द्वारा बलात्कार के कारण 190,000 (या जर्मनी में युद्ध के बाद के अनुमानित जन्मों का लगभग 5%) तक की संख्या हो सकती है। इतिहासकार आरएम डगलस ने कहानी के पुलिस पक्ष का विश्लेषण किया है, अमेरिकी सेना की सैन्य पुलिस द्वारा आरोपों की जांच करने और पहचाने गए अपराधियों के खिलाफ सैन्य कोर्ट मार्शल शुरू करने के प्रयासों का विश्लेषण किया है। जर्मनी में अमेरिकी सेना को जनवरी और जुलाई 1945 के बीच जर्मन महिलाओं पर बलात्कार की 1301 रिपोर्टें प्राप्त हुईं। समयावधि के विवरण पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी दोनों में वर्षों की यौन हिंसा की ओर इशारा करते हैं। हिंसा में 7 वर्ष की छोटी लड़कियों और 69 वर्ष की महिलाओं को निशाना बनाया गया।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इन मित्र राष्ट्रों के सभी सैनिक यौन हिंसा में शामिल या समर्थित नहीं थे, और प्रेरणाएँ और परिस्थितियाँ व्यापक रूप से भिन्न थीं। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक कारकों ने कब्ज़ा करने वाली ताकतों की धारणाओं और व्यवहारों को प्रभावित किया।

मानसिक और सामाजिक प्रभाव

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन महिलाओं द्वारा अनुभव की गई यौन हिंसा का व्यक्तियों और युद्ध के बाद के जर्मन समाज पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा। इस प्रभाव में शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आयाम शामिल थे, जिन्होंने इन दर्दनाक घटनाओं को सहन करने वाले लोगों के अनुभवों और दृष्टिकोणों को आकार दिया।

कई जर्मन महिलाओं को यौन हिंसा के परिणामस्वरूप तत्काल और ठोस शारीरिक परिणामों का सामना करना पड़ा। हमलों के दौरान लगने वाली चोटें, यौन संचारित संक्रमणों का खतरा और अवांछित गर्भधारण की संभावना ने उनकी पहले से ही चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में कठिनाई की एक अतिरिक्त परत जोड़ दी। सबसे गंभीर अनुमान कब्ज़ा करने वाले सैनिकों द्वारा पैदा हुए 'कब्जे वाले बच्चों' की संख्या को देखकर प्राप्त किया जा सकता है। कब्जा करने वाले सैनिकों के लगभग 5 प्रतिशत बच्चे आक्रामकता के कार्य के परिणामस्वरूप पैदा हुए थे। एक इस अनुमान पर आधारित है कि दस में से एक बलात्कार के परिणामस्वरूप गर्भावस्था हुई ।पश्चिम में 68,000 अवैध कब्जे वाले बच्चों में से 55 प्रतिशत के पिता अमेरिकी थे, 15 प्रतिशत के पिता फ्रांसीसी थे, 13 प्रतिशत के पिता ब्रिटिश थे, 5 प्रतिशत के पिता सोवियत थे, 3 प्रतिशत के पिता बेल्जियन थे और 10 प्रतिशत के पिता अन्य राष्ट्रीयताओं के थे। माताओं के अनुसार, 3,200 बच्चे बलात्कार का परिणाम थे। (Crime unspoken pp 27)

यौन हिंसा का मनोवैज्ञानिक प्रभाव व्यापक था, जिससे कई बचे लोगों को लंबे समय तक चलने वाले आघात का सामना करना पड़ा। युद्ध के दौरान यौन हिंसा का अनुभव करने वाले लोगों में पोस्ट-ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (पीटीएसडी), चिंता, अवसाद और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी कई चुनौतियाँ आम थीं।[13] इन अनुभवों से जुड़े कलंक और चुप्पी ने उपचार की प्रक्रिया को और जटिल बना दिया।उस समय के प्रचलित सामाजिक मानदंडों ने यौन हिंसा के आसपास चुप्पी और कलंक की संस्कृति में योगदान दिया। कई जीवित बचे लोगों को सामाजिक अलगाव और बहिष्कार का सामना करना पड़ा, क्योंकि आघात पर चर्चा करना या स्वीकार करना अक्सर वर्जित माना जाता था। युद्ध के दौरान यौन हिंसा ने पारस्परिक संबंधों और पारिवारिक गतिशीलता को तनावपूर्ण बना दिया। आघात से बचे भावनात्मक घावों के कारण जीवित बचे लोगों को अंतरंग संबंध बनाने और बनाए रखने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त, यौन हिंसा के परिणाम परिवारों तक फैल गए, जिससे पीढ़ीगत गतिशीलता प्रभावित हुई।

समय के साथ, जैसे-जैसे सामाजिक दृष्टिकोण विकसित हुआ और ऐतिहासिक समझ गहरी हुई, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन महिलाओं के अनुभवों को मान्यता मिली। युद्ध के दौरान महिलाओं द्वारा सहे गए व्यापक आघात की स्वीकार्यता ने संघर्ष की जटिलताओं और बचे लोगों के समर्थन के महत्व की व्यापक समझ में योगदान दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन महिलाओं द्वारा अनुभव की गई यौन हिंसा ने व्यक्तियों और समुदायों पर स्थायी निशान छोड़े। परिणाम में न केवल तत्काल शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिणाम शामिल थे, बल्कि व्यापक सामाजिक परिदृश्य को भी आकार दिया, जिसने आघात, लचीलापन और युद्ध के बाद की वसूली की प्रक्रिया के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यौन हिंसा के प्रति जर्मन अधिकारियों की प्रतिक्रिया जटिल थी और उस समय की अशांत परिस्थितियों से प्रभावित थी। नाज़ी शासन की सत्तावादी प्रकृति, सामाजिक मानदंड और युद्ध की अराजकता सहित कई कारकों ने ऐसे अपराधों को संबोधित करने और रोकने में चुनौतियों में योगदान दिया।

एडॉल्फ हिटलर के नेतृत्व वाला नाज़ी शासन, असहमति को दबाने और जानकारी को नियंत्रित करने के लिए जाना जाता था। जर्मन महिलाओं के ख़िलाफ़ यौन हिंसा की घटनाओं को स्वीकार करना, विशेष रूप से मित्र देशों की सेनाओं द्वारा, राष्ट्रीय ताकत और अजेयता के शासन के प्रचार आख्यान के अनुरूप नहीं था। परिणामस्वरूप, इन अपराधों की आधिकारिक स्वीकृति सीमित थी।नाजी शासन ने वफादारी, बलिदान और लचीलेपन पर जोर देते हुए प्रचार के माध्यम से सार्वजनिक धारणा को आकार देने को प्राथमिकता दी।[14] जर्मन

[12]Eckardt, A. (2015, May 30). Germany Shines Light on Rape by Allied Troops Who Defeated Nazis. Retrieved from [https://www.nbcnews.com/news/amp/ncna363136]

[13] Chiasson, Cassidy L. "Silenced Voices: Sexual Violence During and After World War II." University of Southern Mississippi, August 2015.

[14] Goel, A. (2020, October 4). The (In)famous Wartime Sexual Violence on Women during

© 2026 प्रीतम लाम्बा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

महिलाओं की कमज़ोरियों या पीड़ित होने पर चर्चा करना इस प्रचार का खंडन करता है। नतीजतन, अधिकारियों ने अटूट ताकत का दिखावा बनाए रखने के लिए अक्सर यौन हिंसा की रिपोर्टों को कम महत्व दिया या नजरअंदाज कर दिया। युद्ध के बाद, मित्र राष्ट्रों ने नाजी नेताओं को युद्ध अपराधों के लिए जवाबदेह ठहराने के लिए नूर्नबर्ग परीक्षण आयोजित किया। हालाँकि इन परीक्षणों में मानवता के विरुद्ध अपराधों को संबोधित किया गया था, लेकिन ध्यान मुख्य रूप से नाज़ी शासन द्वारा किए गए अत्याचारों पर था। मित्र देशों की सेना द्वारा जर्मन महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा के मुद्दे पर युद्ध के बाद की कानूनी कार्यवाही में सीमित ध्यान दिया गया।युद्ध के दौरान यौन हिंसा को संबोधित करने के लिए कानूनी ढांचा उस समय अच्छी तरह से स्थापित नहीं था। ऐसे अपराधों पर मुकदमा चलाने के लिए विशिष्ट कानूनों और तंत्रों की अनुपस्थिति का मतलब था कि कानूनी ढांचे के भीतर इस मुद्दे को संबोधित करना चुनौतीपूर्ण था। युद्धोत्तर युग की भू-राजनीतिक जटिलताओं ने इन अपराधों के लिए न्याय पाने के प्रयासों में और बाधा उत्पन्न की। सामाजिक मानदंडों ने यौन हिंसा की प्रतिक्रिया को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[15] ऐसे संवेदनशील विषयों पर चर्चा करने को लेकर प्रचलित कलंक का मतलब था कि कई बचे लोग चुप रहे, और जो लोग बोले उन्हें संभावित बहिष्कार का सामना करना पड़ा। इस सांस्कृतिक चुप्पी ने युद्ध के दौरान यौन हिंसा को संबोधित करने और रोकने में कठिनाइयों में योगदान दिया।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि जर्मन अधिकारियों की प्रतिक्रिया उस समय के विशिष्ट ऐतिहासिक और राजनीतिक संदर्भ से प्रभावित थी। नाज़ी शासन की सत्तावादी प्रकृति, युद्ध से उत्पन्न चुनौतियों के साथ मिलकर, जर्मन महिलाओं द्वारा अनुभव की गई यौन हिंसा की अधिक व्यापक स्वीकृति और प्रतिक्रिया में बाधा उत्पन्न हुई। इन वर्षों में, जैसे-जैसे सामाजिक मानदंड विकसित हुए और ऐतिहासिक शोध गहरा हुआ, इन घटनाओं की अधिक सूक्ष्म समझ सामने आई है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अपने सैनिकों द्वारा की गई यौन हिंसा की रिपोर्टों पर सोवियत अधिकारियों की प्रतिक्रिया को अक्सर चुप्पी, इनकार और सीमित स्वीकृति के संयोजन द्वारा चिह्नित किया गया था। जोसेफ स्टालिन के नेतृत्व में सोवियत शासन की प्रकृति ने इन घटनाओं को संबोधित करने के तरीके को प्रभावित किया।

सोवियत अधिकारी जानकारी को सख्ती से नियंत्रित करने और एक ऐसी कथा बनाए रखने के लिए जाने जाते थे जो सोवियत संघ को एक शक्तिशाली और नैतिक रूप से श्रेष्ठ शक्ति के रूप में चित्रित करती थी। सोवियत सैनिकों द्वारा यौन हिंसा की रिपोर्टों को स्वीकार करना या संबोधित करना इस सावधानीपूर्वक तैयार की गई छवि का खंडन करता है। नतीजतन, ऐसी घटनाओं को आधिकारिक तौर पर नकारने या कमतर आंकने की प्रवृत्ति बढ़ गई।सोवियत संघ के भीतर और अंतर्राष्ट्रीय चर्चा में, यौन हिंसा की रिपोर्टों को अक्सर दबा दिया जाता था। सोवियत शासन ने अपनी सेनाओं के आचरण से जुड़ी कहानी को नियंत्रित करने की कोशिश की और कदाचार की घटनाओं को गोपनीय रखा गया। सूचना के दमन ने सोवियत सैनिकों के कार्यों के लिए पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी में योगदान दिया। सोवियत नेतृत्व ने सोवियत सैनिकों की नायक और फासीवादी आक्रामकता के शिकार के रूप में छवि पर जोर दिया। हालाँकि यह कथा स्वाभाविक रूप से झूठी नहीं थी, लेकिन यह अक्सर यौन हिंसा सहित सोवियत सेनाओं द्वारा किए गए किसी भी कदाचार के बारे में चर्चा को ढक देती थी या हाशिये पर डाल देती थी। आंतरिक मुद्दों को स्वीकार करने के बजाय सामूहिक वीरता और बलिदान पर जोर दिया गया। स्टालिन के शासन की विशेषता असहमति के खिलाफ दमनकारी उपाय थे। जिन व्यक्तियों ने यौन हिंसा सहित सोवियत सैनिकों के कदाचार के बारे में बोलने का प्रयास किया, उन्हें कारावास या उत्पीड़न सहित गंभीर परिणामों का जोखिम उठाना पड़ा। [16]इस दमन ने ऐसी घटनाओं के बारे में खुली चर्चा को हतोत्साहित किया। जबकि सोवियत संघ ने धुरी शक्तियों द्वारा किए गए युद्ध अपराधों पर मुकदमा चलाने के लिए नूर्नबर्ग परीक्षणों में भाग लिया, सोवियत सेनाओं द्वारा किए गए कदाचार को संबोधित करने पर सीमित जोर दिया गया था। मुख्य रूप से ध्यान दुश्मन द्वारा किए गए अत्याचारों पर रहा। आंतरिक कदाचार को संबोधित करने के लिए कानूनी ढांचा अच्छी तरह से स्थापित नहीं था।

वास्तव में, आज तक यह रूस में एक वर्जित विषय है, बलात्कार को एक मिथक के रूप में खारिज कर दिया जाता है, लाल सेना के खिलाफ पश्चिमी प्रचार, या जिसे आज नकली समाचार कहा जा सकता है। जब बीवर की किताब सामने आई, तो लंदन में तत्कालीन रूसी राजदूत ग्रिगोरी करासिन ने उन पर "झूठ, बदनामी और ईशनिंदा" का आरोप लगाया और किताब को रूसी स्कूलों और कॉलेजों में प्रतिबंधित कर दिया गया। 2014 में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने एक कानून पर हस्ताक्षर किए, जिसमें कहा गया कि जो कोई भी द्वितीय विश्व युद्ध में रूस के रिकॉर्ड को बदनाम करेगा, उसे भारी जुर्माना और पांच साल की जेल हो सकती है।[17] बीवर को संदेह है कि उसके द्वारा उपयोग किए गए रिकॉर्ड को अभिलेखागार से हटा दिया गया है। प्रमुख दैनिक गज़ेटा वायबोरज़ा के अनुसार, पोलिश शहर ग्दान्स्क में, शहर के रिकॉर्ड का अनुमान है कि 40 प्रतिशत तक महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया था। 2013 में ग्दान्स्क में जेरज़ी ज़ुम्ज़ीक

WW II. Retrieved from [*https://thekootneeti.in/2020/10/04/the-infamous-wartime-sexual-violence-on-women-during-ww-ii/*]

[15]Morgan, Martin K.A. "*Wretched Misconduct of the Red Army*." Spring 2012. [*https://warfarehistorynetwork.com/article/wretched-misconduct-of-the-red-army/*]

[16]Eglitis, Daina S. "*The Soviet Legacy of Rape and Denial*." 13 May 2022. [*https://www.eurozine.com/the-crimes-of-bucha-have-a-long-history/*]

[17]Reuters. "Russia Fights Back in Information War with Jail Warning Article." Reuters, 4 March 2022, [https://www.reuters.com/world/europe/russia-introduce-jail-terms-spreading-fake-information-about-army-2022-03-04/].

© 2026 प्रीतम लाम्बा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

नामक एक युवा कला छात्र ने एक रूसी सैनिक की मूर्ति बनाई,[18] जो एक भारी गर्भवती महिला के पैरों के बीच घुटनों के बल बैठा था, एक हाथ से उसके बाल पकड़े हुए था और दूसरे हाथ से उसके मुँह में पिस्तौल दबाए हुए था। उन्होंने इसका नाम कोम, फ्राउ रखा, जिसका अर्थ है "यहाँ आओ, महिला," उन कुछ जर्मन वाक्यांशों में से एक जिन्हें लाल सेना के सैनिक जानते थे और जिनसे सभी जर्मन महिलाएँ डरती थीं। उग्र रूसी शिकायतों के बीच कुछ ही घंटों में मूर्ति को तोड़ दिया गया।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यौन हिंसा के मुद्दे पर सोवियत अधिकारियों की प्रतिक्रिया उस समय के राजनीतिक माहौल से प्रभावित थी, जो एक अधिनायकवादी शासन की विशेषता थी जो एक विशेष कथा को बनाए रखने को प्राथमिकता देती थी। इन वर्षों में, जैसे-जैसे सोवियत संघ विकसित हुआ और ऐतिहासिक अनुसंधान का विस्तार हुआ, युद्धकालीन अनुभव के इन जटिल पहलुओं को स्वीकार करने और चर्चा करने में अधिक खुलापन आया है।

यौन हिंसा का कारण सोवियत और अन्य सैनिक ऐसा क्यों करते हैं?द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सोवियत सेनाओं और अन्य सैनिकों सहित सैनिकों द्वारा की गई यौन हिंसा के पीछे के कारण जटिल और बहुआयामी थे।

सोवियत सेनाओं के मामले में, पूर्वी मोर्चे पर विशेष रूप से क्रूर लड़ाई और जीवन की महत्वपूर्ण हानि देखी गई। नाज़ी जर्मनी द्वारा सोवियत संघ पर आक्रमण के परिणामस्वरूप व्यापक तबाही हुई, जिसमें लेनिनग्राद की कुख्यात घेराबंदी और स्टेलिनग्राद की लड़ाई भी शामिल थी। बदला लेने और बदला लेने की इच्छा से प्रेरित कुछ सोवियत सैनिकों ने जर्मन क्षेत्र पर आक्रमण को दुश्मन आबादी को पीड़ा पहुँचाने के एक अवसर के रूप में देखा। युद्ध के मनोवैज्ञानिक प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता। सभी मोर्चों पर सैनिकों को तीव्र तनाव, आघात और भटकाव का सामना करना पड़ा। युद्ध की क्रूर प्रकृति, युद्ध की भयावहता को देखना और साथियों को खोना, मुकाबला करने के तंत्र को विकृत करने में योगदान कर सकता है, जिससे कुछ व्यक्ति यौन हिंसा सहित हिंसा के कृत्यों में शामिल हो सकते हैं।

युद्ध में अक्सर हिंसा के कृत्यों को उचित ठहराने के लिए दुश्मन का अमानवीयकरण शामिल होता है।[19] धुरी राष्ट्र और मित्र देशों दोनों की शक्तियों के प्रचार ने विरोधी पक्ष के अमानवीयकरण में योगदान दिया। शत्रु आबादी को मानव से कम के रूप में देखने से कुछ सैनिकों के लिए यौन हिंसा के कृत्य करना आसान हो सकता है, विजित आबादी को व्यक्तियों के बजाय वस्तुओं के रूप में देखना। युद्ध की अराजकता, विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के चरणों के तीव्र और तीव्र आंदोलनों के दौरान, सैन्य अनुशासन के टूटने में योगदान दिया। प्रभावी आदेश और नियंत्रण के अभाव में, कुछ सैनिक दण्डमुक्ति के साथ आपराधिक व्यवहार में लगे हुए हैं। युद्ध क्षेत्रों में सामाजिक और कानूनी मानदंडों के टूटने से कदाचार के लिए जवाबदेही की कमी हो सकती है। यौन हिंसा के कृत्यों के लिए तत्काल परिणामों की कमी, विशेष रूप से कब्जे की अराजकता के दौरान, कुछ सैनिकों को ऐसे अपराध करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। एक स्पष्ट कानूनी ढांचे और प्रवर्तन तंत्र की अनुपस्थिति ने ऐसे माहौल में योगदान दिया जहां अपराधियों को अपने कार्यों के लिए न्यूनतम जवाबदेही का सामना करना पड़ा। पहले से मौजूद सामाजिक मानदंड और लिंग गतिशीलता ने भी एक भूमिका निभाई। महिलाओं के प्रति वस्तुकरण और दुर्व्यवहार की जड़ें ऐतिहासिक हैं, और युद्धकालीन स्थितियों में निहित शक्ति असंतुलन मौजूदा असमानताओं को बढ़ा सकता है। युद्ध के एक उपकरण के रूप में यौन हिंसा का उपयोग व्यापक लिंग-आधारित हिंसा और भेदभाव की अभिव्यक्ति है। युद्ध के दौरान यौन हिंसा के पीछे की प्रेरणाओं को समझना मूल कारणों को संबोधित करने और भविष्य में ऐसे अत्याचारों को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है। इसमें मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और ऐतिहासिक कारकों की जटिल परस्पर क्रिया को स्वीकार करना शामिल है जो जो सशस्त्र संघर्ष के अराजक और अमानवीय संदर्भ में इन अपराधों को अंजाम देने में योगदान करते हैं।

ऐतिहासिक स्रोत और दस्तावेज़

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मित्र देशों की सेना द्वारा जर्मन महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा के संबंध में इतिहासकारों की राय अलग-अलग हो सकती है, जो विविध दृष्टिकोण, अनुसंधान पद्धतियों और ऐतिहासिक साक्ष्यों की व्याख्या को दर्शाती है।

लोगों को इस पर ध्यान देने में आधी सदी से अधिक का समय लग गया। जब एंटनी बीवर के खुलासे के एक साल बाद 2003 में गुमनाम बर्लिन महिला का संस्मरण दोबारा प्रकाशित हुआ, तो यह बेस्टसेलर बन गया। तब तक वह मर चुकी थी. एक और कष्टदायक वृत्तांत, वारुम वॉर इच ब्लॉस एइन माडचेन? (व्हाई डिड आई हैव टू बी अ गर्ल?), गैबी कोप्प द्वारा 2010 में प्रकाशित किया गया था, जो सार्वजनिक रूप से अपने साथ हुई पीड़ा के बारे में बात करने वाली पहली महिला थीं। जनवरी 1945 में जब वह बर्फ में भाग रही थी तब कोप्प केवल पंद्रह वर्ष की थी जब उसे एक सोवियत सैनिक ने पकड़ लिया था, और चौदह दिनों तक नरक का सामना करना पड़ा, बार-बार बलात्कार किया गया और "छोटी गैबी कहाँ है?" शब्दों पर एक मेज के नीचे छटपटाती रही। उसकी अपनी माँ ने उससे कहा कि वह किसी को न बताए जब आख़िरकार वह भाग निकली और वे फिर से मिल गए। कोप्प ने कहा कि उन्हें जीवन भर सोने में कठिनाई हुई और वह

[18]Alyrium Denryle, Edi, K. A. Pital. "Russian Ambassador Slams Wartime Rape Sculpture." 24 Oct. 2013,[http://www.spiegel.de/international/europe/russia-slams-sculpture-of-soviet-soldier-raping-woman-in-gdansk-a-928492.html].https://www.spiegel.de/international/europe/russia-slams-sculpture-of-soviet-soldier-raping-woman-in-gdansk-a-928492.html]

[19] Matthews, Heidi. "As we remember VE Day, remember too the German women who were raped." The Conversation, 7 May 2018,.York University, Canada.

© 2026 प्रीतम लाम्बा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कभी प्रेम नहीं जान पाईं। उनकी किताब आने के कुछ समय बाद ही उनकी मृत्यु हो गई।[20]

कुछ इतिहासकारों का तर्क है कि जर्मन महिलाओं के खिलाफ मित्र देशों की सेनाओं द्वारा यौन हिंसा हुई थी, लेकिन व्यापक सामान्यीकरण से बचते हुए विशिष्ट घटनाओं की सावधानीपूर्वक जांच की आवश्यकता पर जोर दिया गया। वे युद्धकालीन गतिशीलता की जटिलताओं, व्यापक सैन्य आचरण से व्यक्तिगत कार्यों को अलग करने की चुनौतियों और राजनीतिक और सामाजिक कारकों के प्रभाव पर प्रकाश डालते हैं। उदाहरण: जोर्ग फ्रेडरिक - एक जर्मन इतिहासकार जो जर्मन नागरिकों पर मित्र देशों की बमबारी के प्रभाव पर अपने काम के लिए जाना जाता है, फ्रेडरिक ने जर्मन महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा के विषय की खोज की है। उनकी पुस्तक "द फायर: द बॉम्बिंग ऑफ जर्मनी, है। उनकी पुस्तक "द फायर: द बॉम्बिंग ऑफ जर्मनी, 1940-1945" युद्ध के दौरान महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों सहित व्यापक नागरिक अनुभव को संबोधित करती है।

अन्य इतिहासकारों का तर्क है कि मित्र देशों की सेना द्वारा जर्मन महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा शुरू में स्वीकार की गई तुलना में अधिक व्यापक और व्यवस्थित थी। वे विजयी शक्तियों द्वारा किए गए मानवाधिकारों के उल्लंघन को स्वीकार करने के महत्व पर जोर देते हैं, ऐतिहासिक आख्यानों को चुनौती देते हैं जो ऐसी घटनाओं को कम कर सकते हैं या अनदेखा कर सकते हैं। उदाहरण: एंटनी बीवर - एक ब्रिटिश इतिहासकार और लेखक, बीवर की पुस्तक "बर्लिन: द डाउनफॉल 1945" बर्लिन की लड़ाई और उसके बाद के कब्जे पर प्रकाश डालती है, जिसमें महिलाओं सहित जर्मन नागरिकों के अनुभवों पर प्रकाश डाला गया है। यौन हिंसा के चित्रण के लिए कुछ लोगों द्वारा बीवर की आलोचना की गई है, लेकिन उनके काम ने उस समय की जटिलताओं की व्यापक समझ में योगदान दिया है। ये उदाहरण ऐतिहासिक समुदाय के भीतर दृष्टिकोण की विविधता को दर्शाते हैं। कुछ इतिहासकार इस विषय पर सावधानी से विचार करते हैं, सूक्ष्म विश्लेषण की आवश्यकता पर बल देते हैं और युद्धकालीन अनुभवों के अध्ययन की चुनौतियों को स्वीकार करते हैं। अन्य लोग यौन हिंसा झेलने वाली महिलाओं के अनुभवों को शामिल करने के लिए ऐतिहासिक आख्यानों के पुनर्मूल्यांकन का तर्क देते हुए अधिक आलोचनात्मक परीक्षण की वकालत करते हैं।[21]

आज तक केवल दो किताबें हैं जो व्यापक दर्शकों तक पहुंची हैं: 'एनोनिमस' की डायरी ,जिस पर 2008 में एक फिल्म बनाई गई थी, और 1992 में नारीवादी और फिल्म निर्माता हेल्के सैंडर द्वारा पहला अध्ययन। दोनों परियोजनाएं एक ही सेटिंग थी - बर्लिन - और एक ही अपराधी - लाल सेना के सदस्य। ये दोनों अध्ययन कितने भी योग्य क्यों न हों, उन्होंने अधिकांश जर्मनों के इस विश्वास को पुष्ट किया कि युद्धकालीन यौन हिंसा सोवियत सैनिकों की समस्या थी, जबकि अन्य मित्र राष्ट्रों को प्यारी जर्मन महिलाओं से बचाना था। इस प्रकार सैंडर और 'एनोनिमस', और पत्रकार एरिच कुबी ने अपनी श्रृंखला 'द रशियन्स इन बर्लिन' के साथ, जो 1960 के दशक में जर्मन समाचार पत्रिका डेर स्पीगल में छपी थी, ने रूढ़िवादिता की पुष्टि करने में मदद की। परिणामस्वरूप, जिस तरह से लोग द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में सामूहिक बलात्कार को याद करते हैं वह एक दाएं-बाएं प्रश्न बन गया है: एक तरफ, पूर्वी यूरोप से जर्मन शरणार्थियों का प्रतिनिधित्व करने वाले संशोधनवादी और दक्षिणपंथी पदाधिकारी, जिनके लिए महिलाओं की पीड़ा ग्रेटर जर्मनी के सपने का हिस्सा थी, और दूसरी ओर, वामपंथी, जो सोवियत सेना द्वारा बलात्कार को कम करके सोवियत 'मुक्तिदाताओं' की प्रतिष्ठा की रक्षा करना चाहते थे। यह आज भी इस विषय से निपटने में सबसे बड़ा पूर्वाग्रह बना हुआ है।

व्यक्तियों और समाजों पर संघर्ष के दीर्घकालिक प्रभाव को समझने के लिए यौन हिंसा के ऐतिहासिक उदाहरणों की जांच करना महत्वपूर्ण है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान महिलाओं को जो आघात झेलना पड़ा, उसके स्थायी परिणाम हुए और इस इतिहास को स्वीकार करने से युद्धकालीन हिंसा के अंतर-पीढ़ीगत प्रभावों की व्यापक समझ में योगदान मिलता है।[22]

यह विषय सशस्त्र संघर्षों के दौरान लिंग आधारित हिंसा के व्यापक मुद्दे पर प्रकाश डालता है। यौन हिंसा के ऐतिहासिक उदाहरणों से सीखे गए सबक दुनिया भर में संघर्ष क्षेत्रों में लिंग आधारित हिंसा को रोकने और संबोधित करने के लिए समकालीन प्रयासों को सूचित कर सकते हैं। यह युद्ध के समय महिलाओं के अधिकारों और सम्मान की रक्षा के महत्व को रेखांकित करता है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यौन हिंसा के बारे में चल रही चर्चाएं संशोधनवादी या अत्यधिक स्वच्छ ऐतिहासिक आख्यानों को चुनौती देती हैं। अतीत की जटिलताओं की आलोचनात्मक जांच करके, हम ऐतिहासिक सटीकता और सच्चाई को संरक्षित करने के महत्व को सुदृढ़ करते हैं। यह मुद्दा युद्धकालीन यौन हिंसा के मामलों में जवाबदेही और न्याय की आवश्यकता पर जोर देता है। इसमें अंतरराष्ट्रीय कानूनी तंत्र और न्यायाधिकरणों का समर्थन करना शामिल है जो मानवता के खिलाफ अपराधों और युद्ध अपराधों को संबोधित करते हैं। यौन हिंसा पर ऐतिहासिक शोध संघर्ष-संबंधी

[20] Interview with Kopp in Der Spiegel, February 26, 2010. Beyer, S. (2010, February 26). German Woman Writes Ground-Breaking Account of WW2 Rape. Retrieved from

[https://www.spiegel.de/international/germany/harrowing-memoir-german-woman-writes-ground-breaking-account-of-ww2-rape-a-680354.html]

[21]Gebhardt, Miriam. Crimes Unspoken: The Rape of German Women at the End of the Second World War. Polity Press, 2016.

[22]Gebhardt, Miriam. Crimes Unspoken: The Rape of German Women at the End of the Second World War. Polity Press, 2016.

© 2026 प्रीतम लाम्बा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

यौन हिंसा को रोकने और प्रतिक्रिया देने के उद्देश्य से नीतियों के विकास में योगदान देता है। ऐसी हिंसा के पैटर्न, परिणाम और मूल कारणों को समझकर, नीति निर्माता संघर्ष क्षेत्रों में नागरिकों की सुरक्षा के लिए अधिक प्रभावी उपायों की दिशा में काम कर सकते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यौन हिंसा सहने वाली महिलाओं के अनुभवों की खोज करना आज संघर्ष-संबंधी हिंसा से बचे लोगों के साथ सहानुभूति और एकजुटता को बढ़ावा देता है। यह बचे लोगों का समर्थन करने, उनके अनुभवों को स्वीकार करने और एक अधिक न्यायपूर्ण और दयालु दुनिया बनाने की दिशा में काम करने के महत्व को पुष्ट करता है।

इस ऐतिहासिक विषय को शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल करने से युद्धकालीन अनुभवों की जटिलताओं के बारे में जागरूकता बढ़ती है। नागरिक आबादी, विशेषकर महिलाओं पर संघर्ष के प्रभाव के बारे में वर्तमान और भावी पीढ़ियों को शिक्षित करना, अधिक सूचित और सहानुभूतिपूर्ण वैश्विक समाज में योगदान दे सकता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मित्र देशों की सेनाओं द्वारा जर्मन महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा का अध्ययन करने की प्रासंगिकता सशस्त्र संघर्षों के दौरान और बाद में मानव अधिकारों, लिंग आधारित हिंसा और राष्ट्रों की नैतिक जिम्मेदारियों पर समकालीन चर्चाओं को सूचित करने की क्षमता में निहित है। [23]ऐतिहासिक अनुभवों को पहचानकर और उनसे सीखकर, समाज वर्तमान और भविष्य में इसी तरह के अत्याचारों को रोकने और संबोधित करने की दिशा में काम कर सकता है।

ऐतिहासिक सटीकता को संरक्षित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि आने वाली पीढ़ियों को महिलाओं के अनुभवों सहित युद्धकालीन अनुभवों की जटिलताओं के बारे में सूचित किया जाए।

कुछ व्यक्ति जर्मन महिलाओं के ऐतिहासिक अनुभवों को मानवाधिकारों और लैंगिक समानता की व्यापक वकालत से जोड़ते हैं। अतीत के अन्यायों की पहचान एक ऐसी दुनिया को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को बढ़ावा देती है जहां मानवाधिकारों की रक्षा की जाती है, और महिलाओं के खिलाफ हिंसा को सक्रिय रूप से संबोधित किया जाता है। यहां उल्लिखित विचार सामान्य प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। व्यक्तिगत और सामूहिक स्मृति पर प्रभाव और मानवाधिकारों और लिंग-आधारित हिंसा पर समकालीन चर्चाओं के लिए इसके निहितार्थ को पहचानते हुए, इस विषय पर संवेदनशीलता के साथ विचार किया गया है।

संघर्ष के समय में यौन हिंसा को अंजाम देना एक जटिल और बेहद परेशान करने वाली घटना है जिसे उचित नहीं ठहराया जा सकता। इस बात पर जोर देना महत्वपूर्ण है कि यौन हिंसा मानवाधिकारों और मानवीय कानून का घोर उल्लंघन है, और इसे कभी भी स्वीकार्य या क्षम्य व्यवहार नहीं माना जाना चाहिए।

युद्ध में सामूहिक बलात्कार को "दूसरे को अपमानित करने और समाज की सांस्कृतिक, पारंपरिक और धार्मिक अखंडता को नष्ट करने का एक साधन" के रूप में देखा जा सकता है। महिलाओं को अक्सर राष्ट्र के प्रतीक के रूप में देखा जाता है या कम से कम एक ऐसी चीज़ के रूप में देखा जाता है जिसे संरक्षित करने की आवश्यकता होती है। राष्ट्र। एक "शत्रु" महिला का यौन हमला दुश्मन पुरुषों पर जीत और "अन्य" राष्ट्र पर पूर्ण हार का प्रतीक हो सकता है। सामूहिक बलात्कार सोवियत राष्ट्रवाद, सैन्यवाद और पितृसत्तात्मक पुरुषत्व का परिणाम था। अंततः, द्वितीय विश्व युद्ध में सोवियत सैनिकों की कार्रवाइयों ने "अन्य महिलाओं, अन्य पुरुषों और अन्य राष्ट्रों पर मर्दाना वर्चस्व स्थापित किया;" यह मर्दाना लाल सेना के सिपाही नायक द्वारा पूरे नाजी राष्ट्र की हार का प्रतीक था।'' जर्मन महिलाओं को अपमानित करते हुए, सोवियत ने जर्मन पुरुषों को भी निर्बल कर दिया और उन्हें 'नपुंसक' करार दिया क्योंकि वे जर्मन महिलाओं की रक्षा करने में सक्षम नहीं थे। "उनकी [जर्मन] महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा उनके राष्ट्रीय गौरव, मर्दानगी और सम्मान को नष्ट करने के तरीकों में से एक है। युद्ध में सेक्स और हिंसा के बीच आम तौर पर देखे जाने वाले संबंध का परिणाम क्या होता है।''बलात्कार के पीछे प्रतीकवाद स्थापित करने में समस्या यह है कि यह अक्सर महिला पीड़ित के आघात और पीड़ा पीड़ा से दूर ले जाता है और इसे एक अधिक व्यापक राष्ट्रीय मुद्दा बना देता है या इस पर जोर देता है। [24]

बर्लिन में लाल सेना के युद्ध स्मारक पर एक रूसी सैनिक की विशाल आकृति लगी हुई है। उनके गढ़े हुए चेहरे पर वीरतापूर्ण विजय की अभिव्यक्ति है। उसके एक हाथ में एक बच्चा है, जबकि दूसरे हाथ में तलवार है जो स्वस्तिक को तोड़ती है। लेकिन गेब्रियल कोएप सहित युद्धकालीन पीढ़ी की जर्मन महिलाओं के लिए, उस स्मारक का एक और नाम है: "अज्ञात बलात्कारी की कब्र।"[25] जो बलात्कार पीड़ित महिलाओं के गुस्से व वेदना को दर्शाता है। जर्मन महिलाओं के साथ यौन हिंसा की भयावहता को लेखक अलेक्सांद्र सोल्झेनित्सिन, जो उस समय एक युवा कप्तान थे, की कथात्मक कविता "प्रुशियन नाइट्स" से समझा जा सकता है –

The little daughters are on the mattress
Dead. How many have been on it?
A platoon, a company perhaps?[26]

---

[23] Ash, L. (2015, May 1). The Rape of Berlin. BBC News. Retrieved from [*https://www.bbc.com/news/magazine-32529679]*

[24] *Messerschmidt, James. "Review Symposium: The Forgotten Victims of World War II:*

Masculinities and Rape in Berlin, 1945."

[25]Ash, Lucy. "*The Rape of Berlin*." BBC News, 1 May 2015. [*https://www.bbc.com/news/magazine-32529679]*

[26] Young,Glynn."Poets and Poems: Aleksandr Solzhenitsyn and 'Prussian Nights'."*https://www.tweetspeakpoetry.com/2014/05/20/poets-poems-aleksandr-solzhenitsyn-prussian-nights/*

© 2026 प्रीतम लाम्बा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

मित्र देशों की सेनाओं द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा पर सेमिनार पेपर ने इतिहास के एक जटिल और संवेदनशील पहलू पर प्रकाश डाला है, जो उन महिलाओं के अनुभवों पर प्रकाश डालता है जिन्होंने उथल-पुथल भरे दौर में अत्याचार सहे थे। सेमिनार ने ऐतिहासिक अन्यायों को स्वीकार करने और उन सूक्ष्म संदर्भों को समझने के महत्व पर जोर दिया है जिनमें ये कार्य घटित हुए थे। इसने युद्ध के बाद जर्मन महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया है और जर्मन महिलाओं के अनुभवों पर प्रकाश डाला है। इस इतिहास को व्यापक परिप्रेक्ष्य के साथ देखना महत्वपूर्ण है, यह पहचानते हुए कि युद्धकालीन यौन हिंसा एक निंदनीय घटना है जो राष्ट्रीय सीमाओं को पार करती है। यह समाजों को असुविधाजनक सच्चाइयों का सामना करने, अतीत की गलतियों के लिए जवाबदेही को बढ़ावा देने और एक ऐसी दुनिया को बढ़ावा देने की दिशा में काम करने की आवश्यकता पर जोर देता है जहां परिस्थितियों के बावजूद मानवाधिकारों का सम्मान किया जाता है।

निष्कर्ष

अततः, सेमिनार पेपर युद्धकालीन यौन हिंसा के स्थायी परिणामों और इतिहास से सीखने, सहानुभूति को बढ़ावा देने और अधिक न्यायसंगत और न्यायसंगत वैश्विक समाज की दिशा में प्रयास करने की सामूहिक जिम्मेदारी की याद दिलाता है।

पूरे इतिहास में, युद्धकाल में यौन हिंसा एक बार-बार होने वाला मुद्दा रहा है, और जैसा कि यौन हिंसा पर हैंडबुक में कहा गया है, "यह हिंसा की निरंतरता की सबसे चरम सीमा पर स्थित हो सकता है क्योंकि यह समुदायों और राष्ट्रों को दर्द और अपमान पहुंचाने के बारे में है।" और उससे ऊपर जो विशिष्ट व्यक्तियों के लिए कारण है।[27]

REFERENCES

Primary source

1. Anonymous. A Woman in Berlin. Published by Virago Press, 2005.

Secondary source

1. Lamb, Christina. Our Bodies, Their Battlefield: What War Does to Women. Published by William Collins, 2020.

2. Anonymous (later revealed as Marta Hillers). A Woman in Berlin. Published by Virago Press, 2005.

3.Gebhardt, Miriam. Crimes Unspoken: The Rape of German Women at the End of the Second World War. Published by Polity Press, 2015.

4. Brownmiller, S. (1975). Against Our Will: Men, Women, and Rape. New York: Simon & Schuster.

5.Gebhardt, Miriam. Crimes Unspoken: The Rape of German Women at the End of the Second World War. 2016.

Webliography-

1.https://theconversation.com/as-we-remember-ve-day-remember-too-the-german-women-who-were-raped-96196

2.https://www.britannica.com/topic/rape-crime/Rape-as-a-weapon-of-war

3.https://www.victimsheroessurvivors.info/VHS%20abstract.html

4.https://www.eiu.edu/historia/Thomas.pdf

5.https://journal.lib.uoguelph.ca/index.php/footnotes/article/download/6495/6257/32522

6.https://docs.lib.purdue.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=2655&context=clcweb

[27] *Jennifer M. Brown and Sandra L. Walklate, Handbook on Sexual Violence (London: Routledge,2012), 28.*

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

प्रीतम लाम्बा पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर (राजस्थान) के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग में सहायक आचार्य हैं। उनकी अकादमिक रुचि आधुनिक इतिहास, युद्ध अध्ययन, लैंगिक इतिहास तथा सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्रों में है।

© 2026 प्रीतम लाम्बा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/